9

अच्छा कैसे लिखें

आप अब तक भाषा के लिखित रूप का प्रायः प्रयोग करने लगे हैं। फिर भी जब भी कभी नया लिखना होता है तो हम दस बार सोचते हैं क्या लिखें, कैसे लिखें, शुरू कैसे करें– जैसे–किसी को पत्र लिखने में, प्रश्नों के उत्तर लिखने में, अनुच्छेद या छोटा निबंध लिखने में, या ऐसी ही कुछ अन्य परिस्थितियों में। कभी-कभी आप किसी घटना से इतना प्रभावित होते होंगे कि आपका मन उसके बारे में लिखने को करता होगा। शायद आप डायरी में नियमित रूप से अपने विचारों को लिखते हों। या कभी-कभी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हों। इस प्रकार 'लिखना' कौशल के अनेक रूप हैं।

आप सहमत होंगे कि 'बोलना' जितना आसान है, 'लिखना' उतना नहीं, किंतु लिखने का प्रभाव बोलने से अधिक स्थायी और प्रभावी होता है। परंतु शर्त यह है कि हमें प्रभावी ढंग से लिखना आए। इस पाठ में हम यही सीखेंगे कि प्रभावी ढंग से कैसे लिखा जा सकता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- सही शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास और वाक्य-गठन करना सीख सकेंगे;
- शुद्ध हिंदी-लेखन के गुर पहचान सकेंगे;
- लिखित अभिव्यक्ति को मुहावरे, लोकोक्ति आदि के प्रयोग से अधिक प्रभावी बना सकेंगे;
- विरामचिह्न आदि का सही प्रयोग सीख सकेंगे;
- अपने विचार को सही क्रम देते हुए उन्हें अपनी भाषा में ढाल सकेंगे;
- अनुच्छेद, कहानी, आलेख आदि को पढ़कर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

क्रियाकलाप 9.1

कंप्यूटर प्रयोग संबंधी दस वाक्य का एक अनुच्छेद लिखिए –

....

....

....

9.1 भावों की अभिव्यक्ति और भाषा

कहते हैं कि खुशी बाँटने से बढ़ती है और दुख कहने से कम हो जाता है। दैनंदिनी कार्यकलापों में सुख या दुख की जो अनुभूति होती है, वह अनायास ही व्यक्त हो जाती है। बीमारी के समय हमारे मुँह से 'हे राम!' ध्वनि या दुख की अवस्था में कई बार 'ओ!माँ' निकल पड़ता है। इसी तरह के अनेक ध्वनि-संकेतों की सहायता से हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा का सहारा लेते हैं। यह तो हुई मौखिक अभिव्यक्ति की बात। अब लिखित अभिव्यक्ति के लिए हमें चाहिए कि विचारों को क्रमबद्धता देकर अपने भावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग करें। शुद्ध, स्वाभाविक और स्पष्ट लिखने का प्रयास करें। कई बार ऐसा होता है कि हम सोचते तो बहुत हैं मगर ठीक से लिख नहीं पाते। इसके लिए सबसे पहले किसी भी विषय पर हमें एकाग्रभाव से चिंतन-मनन की ज़रूरत होती है। फिर वही चिंतन जब हमारे दिमाग में परिपक्व हो जाता है, तब विचारों के अनुकूल शब्दों का चुनाव किया जाता है और भाषा के सहारे लिखा जाता है। उदाहरण के रूप में आप प्रसन्नता और आश्चर्य की लिखित भाषा में अभिव्यक्ति देखें –

प्रसन्नता अरे ! मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।
देखो, यह तस्वीर क्या कमाल की है !

आश्चर्य अरे! यहाँ आकर मसूद ने मुझे अचरज में डाल दिया !

ये तो हुई भाव या विचार प्रकट करने की बात, मगर इन भावों की वाहिनी-भाषा के लेखन में मौटे तौर पर देखें तो मुख्यतः दो पक्ष हैं। एक तो उसका बाहरी अर्थात् स्वरूप पक्ष है, जिसमें शब्द-चयन, वाक्य-गठन, मुहावरा-प्रयोग, अभिव्यक्ति, शैली आदि आते हैं और दूसरा है भीतरी पक्ष जिसे भाव या विचार पक्ष कह सकते हैं। इसमें विचारों या भावों की गंभीरता, स्पष्टता, सरलता आदि समाहित हैं।

स्वच्छता, सुंदरता और सुडौल अक्षर-निर्माण, हाशिया छोड़कर लिखना, अक्षर, शब्द और वाक्य से वाक्य के बीच दूरी को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है–

अच्छे लेखन की तीन शर्तें हैं–

1. लेखन प्रभावी हो।

2. जो लिखा जाए, वह सटीक हो।

3. जो लिखा जाए, वह व्याकरणिक द ष्टि से शुद्ध हो।

शुद्ध लेखन का मतलब है कि लेखन सुंदर हो, और शब्दों की वर्तनी शुद्ध हो। वाक्य की बनावट ठीक हो। उसमें व्याकरण संबंधी कोई गलती न हो। सटीक लेखन का मतलब है कि आपकी बात बिल्कुल साफ़ और स्पष्ट हो। जो आप कहना चाहते हैं, वही अर्थ निकले और वही दूसरों तक पहुँचे। इसके लिए आप सही शब्द चुनें और सही वाक्य बनाएँ। ऐसे में पढ़ने वाले को कोई उलझन नहीं होनी चाहिए। आप समझ सकते हैं कि ऐसा करने के लिए तीनों सीढ़ियाँ चढ़ना ज़रूरी है। यानी बिना शुद्ध लिखे सटीक लेखन नहीं किया जा सकता। सबसे पहले आपको शुद्ध लिखना सीखना होगा। इसके बाद ही आप सटीक लेखन का कौशल सीख पाएँगे। इसी से आपकी अभिव्यक्ति प्रभावी होगी।

9.2 शब्द से वाक्य तक

हमारी कल्पना पंख पसारती है और हमारे मन में जिन नए-नए भावों का संचार होता है उन्हें हम लिपिबद्ध करना चाहते हैं। अगर हमें शुद्ध लिखना आता ही नहीं तो हम अपने आपको अभिव्यक्त कैसे कर पाएँगे। इसके लिए हमें भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण और उसके बाद शब्द से परिचित होना होगा। अगर हम सही शब्दों का चयन नहीं कर पाते तो लिखते समय वर्तनी के गलत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे आपने कई लोगों को यह कहते सुना होगा कि 'आपने **अस्नान किए** कि नहीं'। यही बात वह लेखन में कर जाते हैं जो कि गलत है। क्योंकि 'अस्नान' की जगह उन्हें **'स्नान'** शब्द लिखना चाहिए था। कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ 'स्थायी' को 'अस्थायी' की तरह उच्चारित किया जाता है, जबकि ऐसा लिखते समय अशुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार एक उदाहरण देखें – 'माँ का दूध बच्चे के लिए पूर्ण अहार होता है'। इस वाक्य में 'अहार' के स्थान पर **'आहार'** लिखा जाएगा। कुछ लोगों की 'व' और 'ब' संबंधी अशुद्धियाँ भी लेखन में हो जाती हैं। **'वर्षा'** को 'बर्षा' और **'वनस्पति'** को 'बनस्पति' लिख जाते हैं। इसके अलावा 'श', 'ष', 'स', की अशुद्धि तो अधिकतर लोगों से हो ही जाती है। वे **'शासन'** को 'सासन', **'नमस्कार'** को 'नमश्कार' और **'कष्ट'** को 'कस्ट' लिख जाते हैं। 'ट' और 'ठ' के लेखन में भी खूब अशुद्धियाँ होती हैं। **'विशिष्ट'** के स्थान पर 'विशिष्ठ' और 'संतुष्ट' की जगह 'संतुष्ठ' लिखते हुए आपने कई लोगों को देखा होगा, जो कि गलत है। इसी तरह हमें 'क्ष' और 'छ' लिखते समय भी अशुद्धियों से बचना होगा। लोग **'क्षमा'** के स्थान पर 'छमा' या 'छिमा' लिख देते हैं। और **'कक्षा'** की जगह 'कच्छा' जबकि 'कच्छा' भिन्न अर्थ रखता है। इस तरह की अशुद्धियाँ बड़ी अशुद्धियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं।

अक्सर आप देखते होंगे लोग बात करते समय हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्दों का बेमेल प्रयोग करते हैं। हालाँकि आजकल इस तरह की भाषा का प्रचलन बोलचाल में बढ़ता चला जा रहा है, जो कि गलत है। कुछ उदाहरण हैं, जैसे–

बिफोर कि वह कुछ बोले मैंने ऐसा कर दिया।
स्कूल जाते समय मुझे राम एंड शामू वॉक करते हुए मिल गए।

इस प्रकार दो या तीन भाषाओं के मिले-जुले शब्दों के प्रयोग को 'कोड मिश्रण' कहते हैं।

इसी तरह हमने कई लोगों को कहते सुना है कि 'मैं अपने आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचने दूँगा।' पत्र के अंत में कई लोग लिख देते हैं 'आपका भवदीय अशोक' मगर ये व्याकरण की मर्यादा की सीमा पार करने जैसा है। एक ही अर्थ देने वाले दो-दो शब्दों का प्रयोग एक ही वाक्य में नहीं होना चाहिए। यह पुनरुक्ति अथवा दुहराव दोष होता है। इसके कुछ और उदाहरण देखें–

*मुझे इसी **खतरे** का **भय** था।*
***गुनगुने गरम** पानी से नहाने में बड़ा मज़ा आता है।*
*काल**चक्र** के **पहिए** के नीचे दबकर सब समाप्त हो जाता है।*
*यह **वजह** है कि जिसके **कारण** आज तक मैं तुमसे नहीं मिला।*

अशुद्ध-भाषा, उच्चारण-दोष, वर्तनी-दोष, शब्द-प्रयोग तथा वाक्य-रचना संबंधी दोष हमारी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में बाधक बनते हैं। शुद्ध बोलना या लिखना एक कौशल है, हुनर है। इस दौरान हम उपयुक्त शब्दों के चयन पर भी थोड़ा-सा विचार करते चलें।

उपयुक्त शब्दों का चयन

उपयुक्त शब्दों के अभाव में हम अपने विचारों या अनुभवों को व्यक्त करने में अक्षम होते हैं। हमारे मन में कोई विचार उठा और हमने उसे भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए शब्द खोज लिए, मगर यह काम यहीं समाप्त नहीं होता। शब्दों के चयन के बाद हमें यह भी देखना होता है कि उनका मेल बैठता है कि नहीं। मान लीजिए आपको लिखना है कि 'मेरे माँ-बाप बूढ़े हो गए हैं।' इसकी जगह यदि आप लिखें कि 'मेरे मम्मी-बाप बूढ़े हो गए हैं', तो अच्छा नहीं लगेगा। मम्मी के साथ बाप का मेल नहीं बैठता। या तो 'मम्मी-पापा' लिखा जाएगा या 'माँ-बाप' या 'अम्मी-अब्बा'। यदि आप लिखें कि 'केरल में लिट्रेसी दर सबसे अधिक है।' तो यह ठीक नहीं होगा। क्योंकि यहाँ शब्दों का प्रयोग बेमेल है। 'लिट्रेसी' अंग्रेज़ी का शब्द है और 'दर' हिंदी का। यहाँ हिंदी में 'साक्षरता-दर' लिखिए या फिर 'लिट्रेसी-रेट'। एक अलग उदाहरण के तौर पर यदि हम लिखें कि 'रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों से घनघोर युद्ध किया था।' तो यहाँ 'घनघोर' शब्द का चयन अनुपयुक्त माना जाएगा। 'घनघोर' की जगह अगर हम 'घमासान' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो यह शब्द-चयन उपयुक्त है।

एक और उदाहरण से ये बात स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है। मान लीजिए कि आप अपने किसी मित्र से मिलने उसके छात्रावास गए और वह कमरे पर नहीं मिला। आपको उससे बहुत ज़रूरी काम था तो आप क्या करेंगे? जाहिर है आप उसके नाम एक चिट लिखकर ताले में लगा आएँगे या कमरे में डाल देंगे। मगर उस चिट पर लिखेंगे क्या?

''विनोद, विगत टू डेज से मैं तुमसे मिलना चाहता था, मगर तुम नहीं मिले। तुम्हें ज्ञातव्य हो कि आसन्न परीक्षा के मद्देनज़र मुझे तुमसे बहुत ज़रूरी काम है''। इस तरह से लिखना क्या ठीक है? नहीं–बिल्कुल नहीं। क्योंकि आप इसमें जो कहना चाहते हैं वह ठीक-ठीक व्यक्त नहीं हो पा रहा है। उपयुक्त शब्द चयन और व्यवस्थित तथा सटीक ढंग से कही बात ज़्यादा प्रभावशाली होती है। यहाँ आपकी भाषा अटपटी है, साथ ही साथ 'विगत टू डेज़' जैसे शब्दों का प्रयोग भी ठीक नहीं है। हमेशा अपनी बात सीधे और सही तरीके से कहनी और लिखनी चाहिए। चिट पर लिखना चाहिए था कि ''मित्र विनोद! पिछले दो दिनों से मैं तुमसे मिलना चाहता था। आने वाली परीक्षा के संबंध में तुमसे मिलना बहुत ज़रूरी है।''

प्रभावी लिखने के लिए हमारे पास अधिक-से-अधिक शब्दों की जानकारी हो और उनका हम ठीक-ठीक प्रयोग भी कर सकें। आवश्यकता हो तो हम उपसर्गों-प्रत्ययों की सहायता से नया शब्द भी बना सकें। पर्याय, विलोम, द्विरुक्ति, अनेक के लिए एक शब्द आदि जो हमने पढ़े हैं, वे यहीं काम आएँगे। शब्द-चयन की शिथिलता और चुस्ती को आप नीचे दिए गए उदाहरणों से समझ सकते हैं।

'क'

- शिमला पहाड़ पर बसा देखने योग्य स्थान है।
- आपके माँ-बाप क्या करते हैं?
- वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ पगला गई।
- जीवन और मरना तो लगा ही रहता है।
- चुटकुला सुनकर मैं लोटपोट हो गया।
- माँ प्रातःकाल शिवलिंग पर गंगा का पानी चढ़ाती हैं।

'ख'

- शिमला दर्शनीय पर्वतीय स्थल है।
- आपके माता-पिता क्या करते हैं?
- वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ विभोर हो गई।
- जीवन-मरण (जीना-मरना) तो लगा ही रहता है।
- चुटकुला सुनकर मैं हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।
- माँ प्रातःकाल शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाती हैं।

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ते हुए आप स्वयं समझ गए होंगे कि **स्तंभ 'क'** की अपेक्षा **स्तंभ 'ख'** के वाक्य अधिक चुस्त और प्रभावी हैं। आप कारण भी ढूँढ़ सकते हैं। पहले वाक्य में 'पहाड़ पर बसा' के लिए पर्वतीय और **'देखने योग्य'** के लिए दर्शनीय कर दिया है। 'बाप' शब्द का प्रयोग अब सभ्य संदर्भों में नहीं होता, इसलिए माता-पिता ठीक है। इसी प्रकार **'माँ पगला गई'** की अपेक्षा **विभोर हो गई** या **गद्‌गद हो गई** या **प्रसन्न हो गई** ठीक है।

चौथे वाक्य में शब्द का युग्म अटपटा है—या तो दोनों तत्सम हों (जीवन-मरण) या दोनों तद्भव (जीना-मरना)। इसी प्रकार अगले वाक्यों में भी आप स्वयं कारण तलाश सकते हैं।

क्रियाकलाप 9.2

विशेषण का प्रयोग

विशेषण हमारी भाषा और अभिव्यक्ति को जानदार और प्रभावी बनाते हैं। विशेषण के बिना भाषा नीरस लगती है। उदाहरण देखिए:

(क) मेरी भाभी अच्छी है। उनकी आँखें अच्छी हैं। उनका माथा अच्छा है। माथे पर बिंदी अच्छी लगती है। वह कानों में झुमके पहनती हैं और नाक में लौंग। भाभी के गाल भी बड़े अच्छे हैं...

(ख) मेरी भाभी बहुत सुंदर हैं। वे चौड़े माथे पर बड़ी-सी बिंदी लगाती हैं। उनके बाल काले, लंबे और रेशम से मुलायम हैं। बड़ी-बड़ी चमकीली गोल आँखें तो गज़ब की हैं। तीखी नाक में छोटी-सी जगमगाती लौंग और बड़े कानों में लंबे-से झूलते झुमके बड़े प्यारे लगते हैं। उनके पके सेब जैसे गुलाबी और कोमल गालों के क्या कहने!

चित्र 12.1

स्वयं अनुभव कीजिए कि उपर्युक्त दो वर्णनों में से कौन-सा प्रभावी है और क्यों ? उत्तर है– केवल विशेषणों के कारण। आप उपयुक्त विशेषणों का जितना अच्छा प्रयोग करेंगे, आप की रचना उतनी ही प्रभावी बनेगी।

बायीं ओर दिए हुए विशेषणों की सहायता से किसी पर्वतीय स्थल के सौंदर्य पर कुछ वाक्य लिखकर देखिए:

शीतल, मंद, सुगंधित, हरा, बड़े-बड़े, स्वर्णिम चाँदी-से, ठिठुरता, सरल, कलकल करती, रंगीन, नीला, शुभ्र, उज्ज्वल, गहरी, ऊँची

....

....

....

....

- भावों को व्यक्त करने में कुछ **तुलनाएँ/उपमाएँ** भी लेखन को सुंदर और प्रभावी बनाती हैं, जैसे:
  - आँखें – झील-सी, कमल-सी, हिरनी-सी, मछली-सी, गिद्ध-सी
  - नाक – तोते-सी, चोंच-सी, गिद्ध-सी

- दाँत – मोती-से, सीप-से
- हवा – तीर-सी, आग-सी
- क्रोध – आग-सा, उबाल-सा
- कंठ अथवा स्वर – कोयल-सा, गधे-सा
- रंगरूप (गोरा) – चाँद-सा, चंपे-सा, सोने-सा, गुलाब-सा, मक्खन-सा
- रंगरूप (काला) – आबनूस-सा, साँझ-सा, तवे-सा
- बुद्धिमान – चाणक्य-सा, कलिदास-सा, ब हस्पति-सा
- बलवान – भीम-सा, अर्जुन-सा, हनुमान-सा, गामा-सा
- धनी – कुबेर-सा

क्रियाकलाप 9.3

निम्नलिखित के लिए तीन-तीन उपयुक्त विशेषण लिखिए

मज़दूर	....	....	....
कविता	....	....	....
चाँद	....	....	....
कंप्यूटर	....	....	....
पर्वतशिखर	....	....	....
कहानी	....	....	....

मुहावरों का प्रयोग

शब्दों का मेल बिठाकर व्याकरणिक शुद्धि को जान भर लेने से काम खत्म नहीं होता। क्योंकि हम अपनी लेखन शैली को प्रभावशाली और चुस्त बनाना चाहते हैं। इसलिए हमें सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करना होगा। प्रसंगानुसार शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों के बल पर आपकी भाषा सुंदर हो जाती है। अक्सर आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि 'यह तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।' तो इसका मतलब है कि यह काम बहुत सरल है। यहाँ कहने वाले ने अपनी बात मुहावरे के सहारे आसानी से व्यक्त कर दी है और यह कथन असरदार भी है। मगर मुहावरे के सटीक प्रयोग का भी हमें ध्यान रखना है। मान लीजिए कि किसी बात पर आप अपने मित्र रफ़ीक से सहमत नहीं है और आपने लिख दिया कि ''रफ़ीक की बात मेरे दिमाग में नहीं पचती'' तो यह गड़बड़ प्रयोग होगा। आप बता सकते हैं क्यों? एक तो यहाँ मुहावरे का प्रयोग सटीक नहीं है, दूसरा यहाँ मात्र 'असहमत' शब्द लिखने से बात स्पष्ट हो जाती है। दिमाग में तो कुछ भी नहीं पचता, हाँ पेट में खाना ज़रूर पचता है। लेकिन आप यह तो नहीं लिखना चाहते कि 'रफ़ीक की बात मेरे पेट में नहीं पची' इसका अर्थ बदल जाएगा। दिमाग में बात नहीं घुसती है, ऐसा आपने लिखा नहीं है। इसलिए यह प्रयोग

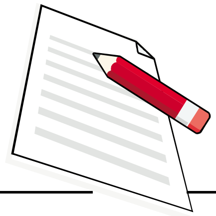

सटीक नहीं हुआ। मान लीजिए कि आपके बड़े भाई आपसे बहुत नाराज हैं। आपने लिखा कि क्रोध में उनका चेहरा कमल के समान लाल हो गया यह उपमा सटीक नहीं है। कमल के फूल से कोमलता का भाव आता है। यह उपमा सुंदरता बताने के लिए दी जा सकती है। इस तरह मुहावरों का सटीक प्रयोग किया जाना चाहिए।

विशेषणों की ही भाँति मुहावरे भी भाषा को जीवंत और प्रभावी बनाते हैं। मुहावरों में कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति देने की क्षमता होती है और मुहावरा-प्रयोग से जो प्रभाव पड़ता है, वह केवल सीधे-सादे शब्दों से नहीं पड़ता। नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए:

'क'

- इस बच्चे की शैतानियों से **मैं बड़ी परेशान हूँ।**
- दादाजी इतने **बूढ़े और कमज़ोर हो चुके हैं कि कभी भी म त्यु हो सकती है।**
- भारतीय सैनिक **लड़ने में जीवन की चिंता नहीं करते।**
- जॉर्ज **अविश्वसनीय लगने वाली गप मारता है।**
- माँ ने **मुझे डाँटा तो मैं बहुत लज्जित हुई।**

'ख'

अब उचित मुहावरों के प्रयोग से भाषा में उत्पन्न चमत्कार को देखिए:

- इस बच्चे ने **मेरी नाक में दम** कर रखा है।
- दादाजी तो **कब्र में पैर लटकाए बैठे हैं।**
- भारतीय सैनिक **सिर हथेली पर रख कर लड़ते हैं।**
- जॉर्ज **बेसिरपैर की हाँकता है।**
- माँ ने **आँख दिखाई तो मैं शर्म से गड़ गई।**

क्रियाकलाप 9.4

एक अनुच्छेद लिखिए जिसमें दिए गए विशेषणों और मुहावरों में से कम से कम पाँच का ठीक प्रयोग हुआ हो।

विशेषण – झगड़ालू, नासमझ, असहिष्णु, दूरदर्शी, भारी-भरकम, उदार, समझदार

मुहावरे – सिर झुकाना, आँख दिखाना, नौ-दो ग्यारह होना, आँखें खुलना, गड़े-मुर्दे उखाड़ना, सिर चढ़ाना, तीन-पाँच करना।

....

....

....

....

....

वाक्य-रचना

अब वाक्य-गठन के नियमों की कुछ बात कर लें। यों नियम जाने बिना भी हम वाक्य रचना करते हैं और खूब करते हैं। बच्चा या अनपढ़ व्यक्ति जब बोलता है तो व्याकरण के नियम जाने बिना बोलता है और प्रायः ठीक ही बोलता है।

पर बोलने और लिखने में थोड़ा अंतर है। बोलने में तो वक्ता प्रत्यक्ष दिखाई देता है और आवाज के उतार-चढ़ाव, पदबंधों की पुनरुक्ति, शरीर भाषा आदि के द्वारा वह अपनी बात को सफलता से समझा देता है, पर लिखने में हमारे वाक्य ही मूक प्रेषक होते हैं अतः उनमें स्पष्टता और शुद्धता आवश्यक है, वाक्यों की शुद्धता की बात करते हुए हमारा ध्यान सबसे पहले अन्विति की ओर जाता है।

अन्विति का अर्थ है ''वाक्य के भीतर पदों के परस्पर संबंध के अनुसार वाक्य में उनका स्थान।'' इसे आप यों समझ सकते हैं, निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए–

''महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा।'' एक तरह से देखने में वाक्य ठीक लगता है, क्रिया है–आभारी रहेगा। कौन आभारी रहेगा? देश (कर्ता); किसका आभारी रहेगा? महात्मा गांधी का; पर 'महात्मा गांधी का' पद का निकटतम संबंध है–'देश' से। इसलिए इस वाक्य का अर्थ हुआ महात्मा गांधी का देश सदा (किसी का) आभारी रहेगा। स्पष्ट है कि वक्ता/लेखक का ये मंतव्य नहीं हो सकता। यह पदों की परस्पर अन्विति ठीक न होने से हुआ है। ठीक अन्विति होगी–

देश महात्मा गांधी का सदा आभारी रहेगा।

अन्विति के प्रमुख नियमों के बारे में जानना आवश्यक है।

9.3 अन्विति संबंधी कुछ बातें

वाक्य रचना करते समय यह ज्ञान होना आवश्यक है कि कौन-सा शब्द कहाँ आएगा? उन शब्दों के ठीक-ठाक संबंध को जानने के लिए उनका एक-दूसरे से सामंजस्य ही अन्विति कहलाता है। जो लिखा जा रहा है, वह व्याकरण-सम्मत होना चाहिए इसलिए पूरे वाक्य में तालमेल बैठाना बहुत ज़रूरी है। दो शब्दों के लिंग, वचन अर्थात् पुरुष, कारक और काल की जो समानता होती है, उसे अन्विति कहते हैं, जैसे – *'छोटी लड़की रोती है।'* उदाहरण में **'छोटी'** शब्द का **'लड़की'** से लिंग और वचन का तालमेल है और **'रोती है'** शब्द लड़की से लिंग, वचन और क्रिया में अन्विति है।

9.3.1 कर्त्ता-कर्म-क्रिया की अन्विति

कई लोग 'गीता ने फल खाई' या 'राकेश ने एक कहानी सुनाया' जैसे वाक्यों का प्रयोग करते पाए जाते हैं। मगर इससे यह पता चलता है कि प्रयोग करने वाले को क्रिया, लिंग और वचन का सही ज्ञान नहीं है। इसके कुछ नियम हैं, आइए उसके बारे में कुछ जानें–

नियम के अनुसारः

कर्त्ता + कर्म + क्रिया

गीता + फल + खाना

यहाँ कर्त्ता 'गीता' स्त्रीलिंग हैं कर्म **'फल'** पुलिंग है, इसलिए क्रिया पुलिंग **'खाया'** होगी और वाक्य बनेगा – 'गीता ने **फल खाया'**।

ठीक ऐसे ही राकेश वाले दूसरे उदाहरण में कर्म स्त्रीलिंग है इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग **'सुनाई'** होगी।

9.3.2 विशेष्य-विशेषण प्रयोग में अन्विति

शुद्ध लेखन के लिए वाक्यों में प्रयुक्त विशेष्य और विशेषण का ज्ञान होना हमारे लिए आवश्यक है। आपने कई प्रयोग देखे होंगे, जैसे–लाल गाय, काली बिल्ली, सफ़ेद हाथी, ऊँची दुकान, फीका पकवान, मोटा लड़का, पतली लड़की आदि। इन रचनाओं में पहला विशेषण और दूसरा विशेष्य है। किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण दोष, रूप-रंग, आकार-प्रकार आदि की विशेषताओं का बोध कराने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। मतलब 'विशेषण' वह शब्द भेद है, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता हो और जिसकी विशेषता बताई जा रही है उसे 'विशेष्य' कहते हैं। पहले उदाहरण में **'लाल'** विशेषण है और **'गाय'** विशेष्य।

आकारांत ('आ' ध्वनि से अंत होने वाले शब्द) विशेषण, जैसे 'गोरा', 'काला', 'पीला' आदि में सावधान रहना है।

9.3.3 संज्ञा-सर्वनाम की अन्विति

लेखन में (वाक्य बनाते समय) संज्ञा प्रयोग में भी अशुद्धि देखने को मिल जाती है, जैसे–

डाकुओं का एक गिरोह पकड़े गए।
फूलों का गुच्छा बहुत अच्छे लगते हैं।

यह वाक्य बनाने वाले की बहुत भारी भूल है। पहले वाक्य में 'पकड़ा गया' और दूसरे में 'अच्छा लगता है' का प्रयोग होना चाहिए था। क्योंकि यहाँ कर्त्ता समूह वाचक संज्ञाएँ (गिरोह, गुच्छा) हैं अर्थात् ऐसे वाक्यों में का, की के बाद में आने वाली संज्ञा कर्त्ता होती है और कर्त्ता के हिसाब से क्रिया एकवचन होगी।

9.3.4 सर्वनाम का प्रयोग

'सुमित कल सुबह आया था। सुमित हिंदी की किताब दे गया था।' इस वाक्य में दो बार सुमित आया है। यह वाक्य ठीक नहीं लग रहा है। इसमें सर्वनाम का प्रयोग करने के बाद वाक्य सही बनेगा, जैसे – *'सुमित कल सुबह आया था। वह हिंदी की किताब दे गया था।'* यहाँ सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य सुधर जाता है। ऐसे शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं।

टिप्पणी

9.3.5 कर्त्ता, कर्म क्रिया अन्विति – वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन, पुरुष उसके कर्त्ता के अनुसार होता है, जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध
• लड़का लोग गए।	• लड़का गया। लड़के गए।
• राम, लक्ष्मण और सीता गई।	• राम, लक्ष्मण और सीता गए।
• आप हमारे घर आ जाओ।	• आप हमारे घर आ जाइए। तुम हमारे घर आ जाओ।

9.3.6 'ने' और 'को' वाले वाक्यों में यह नियम कुछ बदल जाता है। आप जानते हैं कि कर्त्ता के साथ 'ने' लगाकर केवल भूतकाल का वाक्य बन सकता है, जैसे राम ने पाठ पढ़ा। इसमें क्रिया कर्त्ता के अनुसार नहीं, कर्म के अनुसार (लिंग, वचन) होती है, जैसे :

राम ने **पाठ पढ़ा**।
राम ने **पुस्तक पढ़ी**।
राम ने **पुस्तकें पढ़ीं**।

'ने' वाक्य में कर्म के साथ **'को'** लगा हो तो **क्रिया** सदा **अन्य पुरुष एकवचन** ही रहेगी; जैसे–

राम ने पाठ को पढ़ा।
राम ने पुस्तक को पढ़ा।
राम ने पुस्तकों को पढ़ा।

क्रियाकलाप 9.5

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

   (क) हम हमारे घर जा रहे हैं। ....

   (ख) वह जाएगा आज सिनेमा देखने। ....

   (ग) दिल्ली राजधानी है भारतवर्ष की। ....

   (घ) मोहन ने यह काम करके देना है। ....

   (ङ) अजय यह पुस्तकें पढ़ीं। ....

2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए –

   चहिए, मुनी, कवी, अतिथी, हानी, बिमारी, प्रभू, गनेश, शरन, रामायन, बन, साखा, शंकट, भविस्य, निष्टा, छुद्र, नछत्र, इक्षा।

9.3.7 विरामचिह्नों का ठीक प्रयोग

वाक्य का अर्थ ठीक-ठीक समझने में विराम चिह्न भी सहायक होते हैं, इसलिए अच्छी हिंदी लिखने के लिए हमें उचित स्थान पर उपयुक्त विराम चिह्न लगाना चाहिए। विराम चिह्न न लगाने से अर्थ अस्पष्ट होता है और कभी-कभी अर्थ का अनर्थ होने की संभावना भी होती है, जैसे;

- तुम उठो मत बैठे रहो। (अस्पष्ट)
- तुम उठो, मत बैठे रहो। (उठने का आदेश)
- तुम उठो मत, बैठे रहो। (न उठने का आदेश)
- राधा मोहन और कृष्णकांत पधार रहे हैं (दो लोग आ रहे हैं)
- राधा, मोहन और कृष्णकांत पधार रहे हैं (तीन लोग आ रहे हैं)

लंबे और जटिल वाक्यों में विराम चिह्नों की उपयोगिता और बढ़ जाती है, क्योंकि उन्हीं से मालूम होता है कि वाक्य का कौन-सा हिस्सा किस अंश से जुड़ा है और कहाँ किस पर कितना बल हैं।

इस तरह अच्छे लेखन के लिए ज़रूरी है कि पहले हम सही लिखें। हम पहले भी बता चुके हैं सही और शुद्ध लिखने का अर्थ है:

- **शब्दों की वर्तनी शुद्ध हो।**
- **वाक्य की रचना व्याकरण की द ष्टि से ठीक हो।**
- **विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया गया हो।**

9.3.8 वाक्यों के बारे में कुछ और

अच्छी हिंदी लिखने में निपुणता पाने के लिए अच्छे वाक्यों का गठन होना चाहिए। अच्छे वाक्य से तात्पर्य है–सरल, स्पष्ट, चुस्त और आकर्षक वाक्य। हमें यथासंभव जटिल वाक्य बनाने से बचना चाहिए, क्योंकि प्रायः बड़े वाक्यों में गलतियाँ होने की संभावना रहती है। बड़े वाक्य में जो कहना हो उसे दो-तीन-चार छोटे सरल वाक्यों में कह सकें तो अच्छा है। स्पष्टता के बारे में हम अनेक बार बता चुके हैं, क्योंकि अर्थ स्पष्ट होने पर ही लेखन की सार्थकता है। वाक्यों में अनावश्यक शब्द नहीं होने चाहिए और न ही अप्रचलित, कठिन या भारी भरकम शब्दों का प्रयोग। कुछ लोग समझते हैं कि जटिल, तत्सम (संस्कृत) शब्दों के प्रयोग से रोब पड़ता है, यह सच नहीं। सरलता में अनूठी सुंदरता है, स्वयं देखिए:

- वाम प ष्ठ पर लिखित तर्कों का अवलोकन करें।
  - – बाईं ओर लिखे तर्क देखें।
- भारत लक्ष्यप्राप्ति के सन्निकट प्रतीत होता है।
  - – भारत लक्ष्य के पास लगता है।

- महिला लेखिकाओं का सम्मेलन हुआ।
  - लेखिकाओं का सम्मेलन हुआ।
- नेताजी स्वयं अपना आत्मप्रचार करते हैं।
  - नेताजी अपना प्रचार स्वयं करते हैं।
  - नेता जी आत्मप्रचार करते हैं।

क्रियाकलाप 9.6

1. उपयुक्त स्थान पर सही विराम चिह्न लगाकर लिखिए

   एक तो यह कि आप सोच विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है कब जाना है और कहाँ-कहाँ घूमना है यह भी हिसाब लगाएँ कि कितना खर्च होगा फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए आरक्षण कराइए होटल बुक कीजिए या संबंधियों को बताइए जिनके साथ आप टिकना चाहते हैं

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. निम्नलिखित वाक्यों को चुस्त-दुरुस्त बनाकर लिखिए:

   (क) बीमार रोगी को काटकर रोज एक सेब खिलाइए।

   (ख) हिंदुस्तान रोज प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है।

   (ग) पटना बिहार की राजधानी में से होकर अपनी गाड़ी जाएगी।

9.4 प्रभावी स जनात्मक लेखन

प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर आपको लिखकर ही देने होते हैं। जो प्रश्न पाठ्यसामग्री पर आधारित हैं; उनके उत्तरों की आपने तैयारी की होती है और अभ्यास भी। इसलिए वहाँ आप प्रश्न के अनुसार तथ्य या विचार को स्मरण कर उसे क्रमिक रूप में, शुद्ध भाषा में लिख देते हैं। किंतु पत्र, भाव-पल्लवन और निबंध लिखने में आपकी मौलिकता की भी परख होती है। आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप विषय के अनुसार अपने विचारों को क्रम से प्रस्तुत करें। अर्थात् आपके विचारों में भी सरलता हो और वाक्यों में भी। मान लीजिए आप कोई यात्रा-विवरण लिख रहे हैं तो उसमें क्रम होगा–यात्रा की प्रेरणा, स्थान, कैसे गए, विशेष घटना आदि। इन्हें आप क्रम से अलग-अलग अनुच्छेदों में व्यक्त करेंगे और एक अनुच्छेद में जिस विचार पर लिख रहे हैं, उसके वाक्य भी परस्पर जुड़े होंगे। ऐसा नहीं है कि आप 'यात्रा का प्रारंभ' लिख रहे थे और अचानक गंतव्य स्थान में खरीदी किसी चीज़ के बारे में बताने लगे और फिर सह यात्रियों के बारे में।

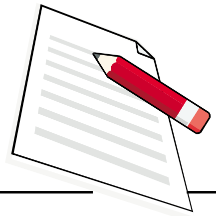

टिप्पणी

भाव पल्लवन में भी आप चुने हुए विषय में अपने भावों का विस्तार करते हुए क्रमिकता और तारतम्यता का ध्यान रखेंगे। पल्लवन का अर्थ अनावश्यक विस्तार नहीं है। न आप अप्रासंगिक बात लिखने के लिए स्वतंत्र हैं। ऐसा करेंगे तो लेखन प्रभावी नहीं बनेगा।

पत्र में विशेषकर घरेलू पत्रों में, निजता एक प्रधान गुण होता है, इसलिए व्यक्तिगत स्नेह, लगाव का वाक्य प्रसंगानुसार ठीक बैठता हो तो देना चाहिए। जैसे *'माँ, जब से तुम गई हो पढ़ाई में मन नहीं लगता। तुम्हारी याद आती है।' 'पिताजी, आप मुंबई से मेरे लिए क्या लेकर आएँगे'* आदि।

प्रभावी लेखन वह है जिसमें

- **शब्दों का प्रयोग सटीक और वाक्यों की बनावट सुगठित होती है।**
- **आपको लिखने में आसान हो और पढ़ने वाले को समझना आसान।**
- **विचार क्रम से रखें, जिससे उसे पढ़ने में आपका मन लगे।**

क्रियाकलाप 9.7

आपने इसी पुस्तक में 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ!' नामक पाठ अब तक पढ़ लिया होगा, उसी पाठ का एक नमूना देखिए–

अंश-1

एक दिन उसे देखते-देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा-का-पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के हल्का पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज में थी, अपने झोंकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यही क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक-झूम में रस लेता रहा। पड़े-पड़े वह पेड़ पूरा न दिखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि हवा कितनी ही तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है–हिलती नहीं है।

अब निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और दोनों में अंतर पहचान कर लिखिए–

अंश-2

स जनात्मक मस्तिष्क के कारण

स जनात्मक मस्तिष्क आत्मविमोही होता है। आत्मविमोही चिंतन में फैंटेसी जैसी प्रक्रिया का प्रभुत्व होता है। यह अपेक्षाकृत यथार्थता बहिर्भूत होता है और अंतर्मुखी रुझानों से भौतिक वस्तुओं का रूपायन-प्रत्यक्षीकरण करता है। इसमें नियंत्रण की उन प्रक्रियाओं से विराम होता है जो यर्थाथता चिंतन को संचालित करती है। अतः यह यथार्थता चिंतन से अधिक सरल तथा तार्किक सूत्रों से अनावरुद्ध है। यह अमूर्त रूपों की बजाए मूर्त रूपों की ओर उन्मुक्त होता है। मूर्तिकरण की रूपाकृतियाँ प्रत्यक्ष बिंब, रूपक साद श्य

इत्यादि हैं। इस चिंतन की चरम परिणति मायावरण तथा तंद्रामूलक बिंबावली है। इस तरह यथार्थता चिंतन के विवेकशील सत्य के विपरीत आत्मविमोही चिंतन का कलात्मक सत्य कल्पनाश्रित तथा मूर्त होता है।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

9.5 सरल लेखन प्रभावी लेखन

निश्चित रूप से आपने पाया होगा कि पहला अनुच्छेद पढ़ने में अधिक आसान और शीघ्र ही समझ में आने वाला है, वहीं दूसरी ओर दूसरा अनुच्छेद अधिक क्लिष्ट है। वह सरलता से समझ में भी नहीं आता परंतु व्याकरणिक द ष्टि से पूर्णतः शुद्ध है। लेखन करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि हमारे मन में जो भाव या विचार हों, वे बिल्कुल स्पष्ट हों, उन्हें व्यक्त करने के लिए हमें प्रतीकों, मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करना होता है। लेकिन हमारी बात दूसरों को तभी समझ में आएगी जब पढ़ने वाला भी उन प्रतीकों या मुहावरों को समझता हो। और हम भी उसका ठीक-ठीक प्रयोग करें। जैसे यदि आप लिखें कि *'राम दौड़ता हुआ डॉक्टर के पास गया'* तो इसे सभी पाठक समझ लेंगे। वे दौड़ने की क्रिया आँखों से देखते हैं इसलिए अनुमान लगा सकते हैं कि राम किस तरह से या किस तेज़ी से गया होगा। इस तरह आप पाठक को एक जानकारी देते हैं। लेकिन इसकी जगह यदि आप लिखते हैं कि *'राम तीर की तरह डॉक्टर के पास गया'* ''तो आप राम के तेज़ दौड़ने के बारे में अपनी राय बता रहे हैं। मान लीजिए आपने दूसरे मुहावरे का प्रयोग किया *''राम आँधी की तरह डॉक्टर के पास गया।''* यह मुहावरा सटीक नहीं है, क्योंकि पाठक को भ्रम हो सकता है कि राम ने डॉक्टर के यहाँ जाकर अव्यवस्था फैला दी। जैसे आँधी आती है और चीज़ों को अव्यवस्थित या अस्त-व्यस्त कर देती है। इन सभी बातों का तात्पर्य है कि भावों और विचारों को व्यक्त करते समय अधिक सावधानी बरतनी ज़रूरी होती है।

अब तक आप जान चुके हैं कि कुछ भी लिखने से पहले आपके मन में कोई बात या विचार आता है। उसे व्यक्त करने के लिए आप शब्द चुनते हैं। जब एक या दो शब्दों से वह बात व्यक्त नहीं हो पाती, तब आप उन शब्दों के सहारे ऐसा वाक्य बनाते हैं जिससे पाठक आपकी बात ठीक-ठाक समझ लें, जैसे—आपको अपना नाम बताना है तो आप लिखते हैं कि 'मेरा नाम रामचंद्र है।' लेकिन एक वाक्य में बात पूरी नहीं हो तो आपको कई वाक्य बनाने होंगे। सारे वाक्य आपसे संबंधित होंगे। यदि ये वाक्य सिलसिलेवार बनाए जाएँ तो कई वाक्यों को मिलाकर एक अनुच्छेद या पैरा बन जाता है। अच्छे लेखन का तकाजा है कि आपके वाक्य क्रमवार और छोटे-छोटे हों। जैसे—आप लिखें कि *''मैं राधोपुर में रहता हूँ। मेरे पिता का नाम श्री शंकरदास है। मैंने दसवीं तक पढ़ाई की है। मेरी माता जी प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका हैं। मेरा नाम रामचंद्र है।''*

यहाँ सभी वाक्य ठीक हैं, लेकिन उन्हें सिलसिलेवार ढंग से नहीं रखा गया है। इसलिए सुगठित और सरल वाक्यों के बावजूद पूरा अनुच्छेद प्रभावशाली नहीं लगता है। वह अनगढ़ और अटपटा लगता है। इसे यों लिखना बेहतर होगा–

'मेरा नाम रामचंद्र दास है। मेरे पिता का नाम श्री शंकर दास है। मैं राधोपुर का रहने वाला हूँ। मैंने दसवीं तक पढ़ाई की है। मेरी माँ प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका हैं।

यह अनुच्छेद का स्वाभाविक विकास है। इसलिए बेहतर और प्रभावशाली लगता है।

जब एक अनुच्छेद में आपकी बात पूरी नहीं होती है तो आप दूसरे और फिर तीसरे अनुच्छेद की रचना करते हैं। जैसे परिचय के बाद आप को अपने शौक या हॉबी के बारे में भी बताना हो। इसके बाद आपको अपनी इच्छा या कार्यक्षेत्र के बारे में बताना हो। इस तरह कई अनुच्छेद मिलकर एक निबंध बन जाता है। लेकिन हर अनुच्छेद अलग-अलग किसी एक पक्ष या विषय पर केंद्रित होता है। ये विषय मूल विषय के ही अलग-अलग हिस्से होते हैं जैसे, अपने बारे में ही लिखना हो तो पहले परिचय, फिर हॉबी या कैरियर की जानकारी देनी आवश्यक होगी। यदि शिक्षा वाले अनुच्छेद में परिवार की बात और कैरियर वाले अनुच्छेद में गाँव की चर्चा करेंगे तो आपका आलेख अरुचिकर और अटपटा हो जाएगा।

9.6 आपने क्या सीखा

1. सबसे पहले अपनी बात व्यक्त करने के लिए हम सही शब्द की तलाश करते हैं।
2. जब सिर्फ़ शब्दों से काम नहीं चलता तो अपनी बात दूसरों को समझाने के लिए हम वाक्य गढ़ते हैं।
3. जब हमारी बात एक वाक्य में पूरी नहीं होती तो हम अनुच्छेद या पैरा बनाते हैं।
4. जब एक अनुच्छेद में भी हमारी बात पूरी नहीं समाती तो हम कई अनुच्छेद वाला निबंध या आलेख तैयार करते हैं।
5. लेखन के समय हम विषय का ध्यान रखते हैं।
6. प्रयोजन और पाठक का भी ध्यान रखते हैं। अर्थात् क्यों लिख रहे हैं और पढ़ने वाला कौन है, इस बात का ध्यान अवश्य रखना आवश्यक है।
7. हम यह भी ध्यान रखते हैं कि बातें उपयुक्त क्रम से रखी जाएँ और एक अनुच्छेद की बात दूसरे अनुच्छेद में गडमड न हों या उनका दुहराव न हो।

अच्छे लेखन के लिए हमेशा ध्यान रखें कि–

- आप क्या किसके लिए लिख रहे हैं।
- लिखते समय ध्यान में रहे कि आप क्यों लिख रहे हैं।
- लेखन विषय के अनुरूप है अथवा नहीं।
- तथ्यों का क्रम ठीक है अथवा नहीं।
- आपके शब्दों का चुनाव और प्रयोग सटीक है अथवा नहीं।
- आपकी भाषा शुद्ध है अथवा नहीं।
- विराम चिह्नों का प्रयोग ठीक ढंग से हुआ है अथवा नहीं।

9.7 योग्यता विस्तार

1. दैनिक जीवन के अनुभवों को आधार बनाकर अपनी एक डायरी लिखना प्रारंभ कीजिए।
2. देश में आज़ादी के बाद से आज तक हुई प्रगति का विवरण अपने शब्दों में लिखिए।

9.8 पाठांत प्रश्न

1. अपने किसी किशोर मित्र के बारे में पाँच अनुच्छेद वाला एक निबंध लिखिए।
2. अपने गाँव की विशेषताओं के बारे में चार अनुच्छेद वाला एक आलेख तैयार कीजिए जो स्थानीय विधायक को भेजा जाना है।
3. नीचे दिए गए चित्र को देखकर शहर में विविध प्रकार के प्रदूषण – वायु, ध्वनि आदि की समस्या पर अपने विचार लिखिए।

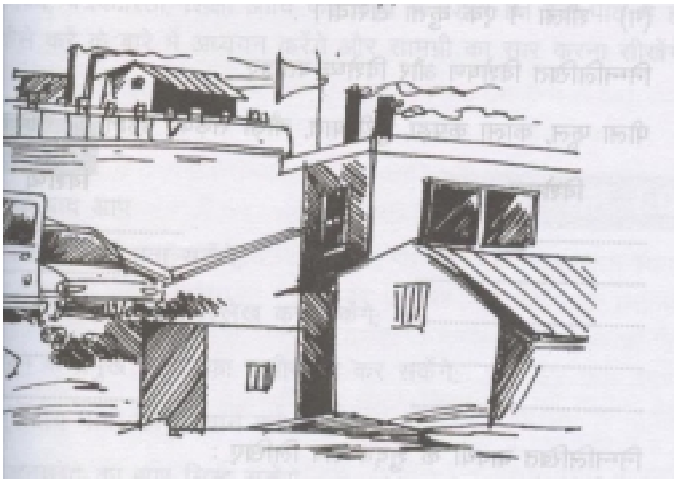

9.2

4. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर विराम–चिह्न लगाइए–

   सुनील मेरी बात सुनो जो मनुष्य बैठा रहता है उसका भाग्य उसके साथ बैठा रहता है वह जब उठता है उसका भाग्य उसके साथ उठता है जब वह सोता है उसका भाग्य उसके साथ सोता है जब वह चलता है उसका भाग्य उसके साथ चलता है इसलिए भ्रमण करो

5. निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित एक कहानी लिखिए –

   (क) शोभना नाम की एक गाँव की चहेती, प्यारी, महत्त्वाकांक्षी लड़की

   (ख) शोभना की शादी बड़ी धूमधाम से होना

   (ग) उसका शहर जाना

(घ) सावन, तीज, त्योहार के अवसर पर गाँव में सभी सखी-सहेलियों को उसकी कमी का एहसास होना।

(ङ) कुछ महीनों बाद शहर से शोभना के जल-मरने की खबर

(च) कारण – ससुराल, दहेज का लालच

6. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए उनका वाक्यों में उचित प्रयोग कीजिए–

(क) अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना

(ख) आसमान से बातें करना

(ग) गागर में सागर भरना

(घ) सिर आँखों पर बिठाना

7. निम्नलिखित वाक्यों की अन्विति शुद्ध कीजिए।

(क) राम ने बाँसुरी बजाया, लड़की ने केला खाई।

(ख) रमेश ने जलेबी खाया, रानी ने धन्यवाद दी।

(ग) शीला ने एक कुत्ता खरीदी।

8. निम्नलिखित विशेषण और विशेष्य बताइए

पीला फूल, काला कपड़ा, बुरी बात, चौड़ी सड़क, नहाने का साबुन।

विशेषण	**विशेष्य**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

9. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

(क) लड़कों की सभा हो रहा था।

(ख) लड़कियों की दल जा रहा है।

10. सर्वनाम का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्यों को सुधारिए:

(क) राम से कहना कि राम शाम को अवश्य आ जाए।

(ख) आज विद्यार्थियों ने घोषणा कर दी है कि विद्यार्थी कल से विद्यालय नहीं आएँगे।

9.9 उत्तरमाला

क्रियाकलापों के उत्तर स्वयं लिखिए।